Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 15

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

16 जून 2016 ई

10 रमज़ान 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान के कारण से कितनी ख़ुदा तआला अपनी ख़ुशी प्रकट करता है कि उनके गुनाह क्षमा कर देता है और उनकी आत्म शुद्धि का स्वयं ज़िम्मेदार होता है। फिर कैसा बदबख़्त वह व्यक्ति है जो कहता है कि मुझे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की आवश्यकता नहीं।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

(9) اِنَّ الَّذِیۡنَ یَکۡفُرُوۡنَ بِاللّٰہِ وَ رُسُلِہٖ وَ یُرِیۡدُوۡنَ اَنۡ یُّفَرِّقُوۡا بَیۡنَ اللّٰہِ وَ رُسُلِہٖ وَ یَقُوۡلُوۡنَ نُؤۡمِنُ بِبَعۡضٍ وَّ نَکۡفُرُ بِبَعۡضٍ ۙ وَّ یُرِیۡدُوۡنَ اَنۡ یَّتَّخِذُوۡا بَیۡنَ ذٰلِکَ سَبِیۡلًا ﴿۱۵۱﴾ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡکٰفِرُوۡنَ حَقًّا ۚ وَ اَعۡتَدۡنَا لِلۡکٰفِرِیۡنَ عَذَابًا مُّہِیۡنًا ﴿۱۵۲﴾ وَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِاللّٰہِ وَ رُسُلِہٖ وَ لَمۡ یُفَرِّقُوۡا بَیۡنَ اَحَدٍ مِّنۡہُمۡ اُولٰٓئِکَ سَوۡفَ یُؤۡتِیۡہِمۡ اُجُوۡرَہُمۡ ؕ

(सूर: अन्निसा 151-153)

(अनुवाद) जो लोग अल्लाह और रसूल से इनकार करते हैं और इरादा रखते हैं कि ख़ुदा और उनके रसूल में फूट डाल दें और कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान लाएँगे और कुछ पर नहीं। अर्थात सिर्फ ख़ुदा का मानना या केवल कुछ रसूलों में विश्वास करना काफी है यह ज़रूरी नहीं कि ख़ुदा के साथ रसूल पर ईमान लाएं या सब नबियों पर विश्वास लाएं और चाहते हैं कि ख़ुदा की हिदायत को छोड़कर मध्य वर्ती धर्म धारण कर लें। वही पक्के काफिर हैं और हम ने काफिरों के लिए अपमानित करने वाला अज़ाब तैयार किया है और जो ख़ुदा और रसूल पर ईमान रखते हैं और ख़ुदा और उनके रसूलों में फूट नहीं डालते अर्थात यह फूट धारण नहीं है कि केवल ख़ुदा पर विश्वास लाए मगर उनके रसूलों पर ईमान न लाएं और न यह फूट पसंद करते हैं कि कुछ रसूलों पर तो ईमान लाऐं कुछ से दूर रहें । उन लोगों को ख़ुदा इनाम देगा।

अब कहाँ हैं मियां अब्दुल हकीम ख़ान मुर्तद जो मेरे इस लेख से मुझ से दूर हो गए। चाहिए कि अब आंख खोलकर देखे कि कैसे ख़ुदा ने अपनी हस्ती पर ईमान लाना रसूलों पर ईमान लाने से जोड़ा है। इस में राज़ यह है कि इंसान में तैहीद स्वीकार करने की क्षमता इस आग की तरह रखी गई है जो पत्थर में छुपी होती है। और रसूल का अस्तित्व चकमक पत्थर की तरह है जो इस पत्थर पर ध्यान की चोट लगाकर उस आग को बाहर निकालता है। तो हरगिज़ संभव नहीं कि बिना रसूल चकमक पत्थर के तौहीद की आग किसी दिल में पैदा हो सके। एकेश्वरवाद को केवल रसूल ज़मीन पर लाता है और इसी के माध्यम से प्राप्त होती है। ख़ुदा छुपा है और वह अपना चेहरा रसूल के द्वारा दिखलाता है।*

(10) یٰۤاَیُّہَا النَّاسُ قَدۡ جَآءَکُمُ الرَّسُوۡلُ بِالۡحَقِّ مِنۡ رَّبِّکُمۡ فَاٰمِنُوۡا خَیۡرًا لَّکُمۡ ؕ وَ اِنۡ تَکۡفُرُوۡا فَاِنَّ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ وَ کَانَ اللّٰہُ عَلِیۡمًا حَکِیۡمًا (सूर: अन्निसा 171

(अनुवाद) ऐ लोगो! तुम्हारे पास रसूल सच्चाई के साथ आया है। अत: तुम इस रसूल पर ईमान लाओ। तुम्हारी भलाई इसी में है और अगर तुम कुफ्र धारण करो तो ख़ुदा को तुम्हारी क्या चिन्ता है। ज़मीन और आसमान सब उसी का है और सभी आज्ञाकारिता कर रहे हैं और ख़ुदा अलीम (बहुत जानने वाला) और हकीम है।

(11) کُلَّمَاۤ اُلۡقِیَ فِیۡہَا فَوۡجٌ سَاَلَہُمۡ خَزَنَتُہَاۤ اَلَمۡ یَاۡتِکُمۡ نَذِیۡرٌ ﴿۹﴾ قَالُوۡا بَلٰی قَدۡ جَآءَنَا نَذِیۡرٌ (सूर: मुल्क 9-10)

(अनुवाद) और जब जहन्नम में कोई सेना काफिरों को पड़ेगी तो जो फरिशते जहन्नम पर निर्धारित हैं वे दोज़खियों को कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था वह कहेंगे कि हां आया तो था मगर हम ने उस का इन्कार किया और हमने कहा कि ख़ुदा ने कुछ नहीं उतारा। अब देखो इन आयतों से साफ प्रमाणित होता है कि नरक वाले नरक में इसलिए पड़ेंगे क्योंकि वे समय के नबियों को स्वीकार नहीं करेंगे।

(12) اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِاللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖ ثُمَّ لَمۡ یَرۡتَابُوۡا

(सूर: हजरात-16)

(अनुवाद) इस के अतिरिक्त कि मोमिन वे लोग हैं जो ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाए फिर इस के बाद अपने ईमान पर कायम रहे और संदेह में नहीं पड़े। देखो ! इन आयतों में ख़ुदा ने सीमित कर दिया है कि ख़ुदा के निकट मोमिन वही लोग हैं कि जो केवल ख़ुदा पर ईमान नहीं बल्कि ख़ुदा और रसूल दोनों पर ईमान लाते हैं तो बिना रसूल पर ईमान के बिना मुक्ति कैसे हो सकती है और बिना रसूल पर ईमान लाने के केवल तौहीद किस काम आ सकती है।

(13) وَ مَا مَنَعَہُمۡ اَنۡ تُقۡبَلَ مِنۡہُمۡ نَفَقٰتُہُمۡ اِلَّاۤ اَنَّہُمۡ کَفَرُوۡا بِاللّٰہِ وَ بِرَسُوۡلِہٖ

(सूर: तौबा :54)

(अनुवाद) अर्थात इस बात का कारण जो काफिरों के सदके स्वीकार नहीं किए जाते सिर्फ यह है कि वह अल्लाह और उसके रसूल से इनकार करते है। अब देखो इन आयतों से साफ स्पष्ट है कि जो लोग रसूल पर विश्वास नहीं करते उनके कर्म बर्बाद हो जाते हैं। ख़ुदा उन को स्वीकार नहीं करता। और फिर जब कर्म बर्बाद हुए तो मुक्ति कैसे होगी।*

(14) وَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اٰمَنُوۡا بِمَا نُزِّلَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ ہُوَ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّہِمۡ ۙ کَفَّرَ عَنۡہُمۡ سَیِّاٰتِہِمۡ وَ اَصۡلَحَ بَالَہُمۡ ﴿۳﴾

(सूर: मुहम्मद3)

(अनुवाद) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और वह कलाम जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ उस पर विश्वास करते हैं और वही सच्चाई है ऐसे लोगों के ख़ुदा गुनाह माफ कर देगा और उनके दिलों का सुधार करेगा। अब देखो कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान के कारण से कितनी ख़ुदा तआला अपनी ख़ुशी प्रकट करता है कि उनके गुनाह क्षमा कर देता है और उनकी आत्म शुद्धि का स्वयं ज़िम्मेदार होता है। फिर कैसा हतभागा वह व्यक्ति है जो कहता है कि मुझे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की आवश्यकता नहीं और अहंकार और घमंड से अपने आप को कुछ समझता है।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 22, पेज 130 से 133)

* एक बार ऐसा संयोग हुआ कि दरूद शरीफ पढ़ने में अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने में एक ज़माने तक मुझे बहुत ध्यान रहा। क्योंकि मेरा मानना था कि ख़ुदा तआला के मार्ग बहुत सूक्ष्म मार्ग हैं वह नबी करीम के माध्यम के बिना नहीं मिल नहीं सकते जैसा कि ख़ुदा भी कहता है وَابۡتَغُوۡۤا اِلَیۡہِ الۡوَسِیۡلَۃَ तब एक अवधि के बाद कशफ की हालत में मैंने देखा कि दो सक्के अर्थात पानी पिलाने वाले आए और एक आंतरिक रास्ते से और एक बाहरी रास्ते से मेरे घर में प्रवेश किया और उनके लिए कंधों पर प्रकाश की मश्कें हैं और कहते हैं हाज़ा बेमा सल्लयत अला मुहम्मदिन।

* यह सारी आयतें उन लोगों के बारे में हैं जिन्होंने रसूल के अस्तित्व पर सूचना पाई और रसूल की दावत उन को पहुँच गई और जो लोग रसूल के अस्तित्व से बिल्कुल अनजान रहे और न उन्हें दावत पहुंची उनके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते। उन के हालात का ज्ञान ख़ुदा है उन से वह मामला करेगा जो उसके दया और न्याय की मांग है। इसी में से।

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अहमदिया मुस्लिम जमाअत यू.के की तेरहवें वार्षिक शान्ति सम्मेलन में अमीरुल मोमिनीन हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह बनसरेहिल अज़ीज़ का सम्मिलित होना।

(इस्लाम की सुंदर और अभूतपूर्व शिक्षा के अनुसार दुनिया में शांति के विषय में ईमान वर्धक ख़िताब) (भाग-2 अन्तिम भाग)

ख़िताब हज़रत अमीरुल मोमिनीन हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि हम अहमदी विश्वास रखते हैं कि ऐसी ही त्रुटियों को ठीक करने के लिए अल्लाह तआला ने युग के इमाम हज़रत संस्थापक सिलसिला अहमदिया को भेजा था। उन्होंने हमें बताया कि धार्मिक युद्ध का समय अब बीत चुका है और अल्लाह तआला चाहता है कि इंसान शांति के साथ एक दूसरे के अधिकार निभाते हुए मिलकर जीवन गुज़ारें। इस बारे में अपनी जमाअत को नसीहत फरमाते हुए हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने एक बार फरमाया कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं की दृष्टि से धर्म के दो हिस्से हैं या यह कहा जा सकता है कि धर्म का आधार दो स्तंभों पर स्थापित है। पहला यह कि ख़ुदा को अकेला पूरे विश्वास के साथ जानो और पूरे ईमानदारी से उसे प्यार और महब्बत और आज्ञाकारिता के सभी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उसकी ओर झुकें। दूसरा यह कि उस की सृष्टि की सेवा करें और अपनी सभी विशेषताओं और ताकतों को दूसरों की सेवा में लगाएँ। और जो आप से नेकी करता है उसके बदले में आप भी शुक्रगुज़ार होते हुए उससे अच्छा व्यवहार करें चाहे राजा हो या शासक या आम लोग। और उनसे हमेशा प्यार का संबंध का निर्माण करें।

फिर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने सूर: अन्नहल की आयत 91 जिसका अनुवाद है "अल्लाह वास्तव में न्याय का और दया का और (ग़ैर रिश्तेदारों को भी) क़राबत वाले (व्यक्ति) की तरह (जानने और इसी तरह सहायता) देने का आदेश देता है।" इस की व्याख्या वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि ख़ुदा तुम से यह चाहता है कि तुम सारी मानव जाति से न्याय के साथ पेश आया करो। इससे मुसलमानों को आदेश दिया गया है कि वे उनसे भी नेकी करें जिन्होंने तुम से कोई भलाई नहीं की। फिर आप ने यह भी फरमाया कि यह आयत एक मुसलमान से मांग करती है कि वह ख़ुदा की सृष्टि से ऐसी सहानुभूति के साथ पेश आए , मानो वह अपने असली रिश्तेदार हैं। जैसा कि मां अपने बच्चों से पेश आती है। "यहाँ हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हर मुसलमान दूसरे इंसानों से उनके रंग और नस्ल, जाति और धर्म की परवाह किए बिना ऐसे प्यार करे जैसा कि एक माँ अपने बच्चों से प्यार रखती है। क्योंकि यह प्यार की शुद्ध और उच्चतम किस्म है क्योंकि अन्य स्थिति में जहां इंसान से किसी से दया का व्यवहार करता है वहाँ यह संभावना है कि एहसान करने वाला कभी अपना उपकार बता दे और बदले में एहसान का इच्छुक भी हो। हालांकि माँ का प्यार नि:स्वार्थ होता है और उसका अपने बच्चे से प्यार का रिश्ता ऐसा अनोखा होता है कि वह इसके लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने को तैयार रहती है। उसे किसी बदला की मांग नहीं होती और न ही इसे किसी प्रशंसा की कोई इच्छा होती है। इसलिए यह वह अत्यंत गुणवत्ता है जिसकी इस्लाम शिक्षा देता है जिस की दृष्टि से मुसलमानों को सारी मानव जाति से ऐसे प्यार की शिक्षा दी गई है जैसे एक माँ बच्चे को प्यार करती है। यही इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अल्लाह तआला का यह आदेश है कि वे जो उस पर विश्वास करते हैं उन्हें चाहिए कि वे उस के गुणों को धारण करें, ताकि एक सच्चे मुसलमान के लिए संभव ही नहीं कि वे ग़लत करे। और इसलिए यह असंभव है कि इस्लाम किसी भी अन्याय, हिंसा और उग्रवाद की अनुमति दे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: पिछले कई सालों से कई बार इस्लाम की बुनियादी बातों के उन बिंदुओं का वर्णन कर चुका हूँ। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मैंने कई बार कुरआन के संदर्भ से यह साबित किया है कि मैं जो कुछ कह रहा हूं वह इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं हैं। हालांकि यह भी सच है कि हमारी शांति के संदेश को मीडिया में बड़े पैमाने पर कवरेज नहीं दी जाती। जबकि इस के मुकाबला में उन थोड़े कुछ लोगों को जो हर प्रकार के उत्पीड़न और हत्याओं में शामिल हैं उन्हें विश्व मीडिया में लगातार कवरेज दी जाती है और बहुत ध्यान दिया जाता है।

इसमें कोई शक नहीं कि मीडिया लोगों की सामान्य राय कायम करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए मीडिया को अपनी इस शक्ति का प्रयोग जिम्मेदारी के साथ भलाई तथा शान्ति की स्थापना करनी चाहिए। इन्हें चाहिए कि वे इस्लाम की असली तस्वीर दुनिया के सामने रखें। बजाय इसके कि मीडिया एक अल्पसंख्यक के क्रूर कामों पर ध्यान रखे । दहशत गर्द और उग्रवादी समूह की ऐसी हरकतों की प्रसिद्धि उनके लिए ऑक्सीजन का काम देती है। इसलिए मुझे इस बात में कोई शक नहीं कि जैसा कि मैंने कहा है कि अगर मीडिया इस बात की ओर ध्यान करे तो हम देखेंगे कि बहुत जल्द ही अत्याचार और बर्बरता और आतंकवाद जो दुनिया पर छाया हुआ है समाप्त होना शुरू हो जाएगी।

हुज़ूर अनवर ने कहा कि मैं व्यक्तिगत रूप से इस बात को समझने में असमर्थ हूँ कि उग्रवादी लोग जिन्होंने इस्लाम और उसकी उच्च शिक्षा से मुंह मोड़ लिया या है वे अपनी इन घृणित गतिविधियों का औचित्य इस्लाम से कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षाएं तो हर प्रकार के अतिवाद से इस हद तक रोकती हैं कि वैध युद्ध के दौरान भी अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया है कि सज़ा अपराध के अनुसार दी जाए। और फरमाया कि बेहतर यह है कि धैर्य से काम लिया जाए और क्षमा कर दिया जाए। इसलिए वे सभी तथाकथित मुसलमान जो हिंसा, अन्याय और बर्बरता में शामिल हैं वे अल्लाह की सज़ा और उसकी नाराजगी को आमंत्रित कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने कहा कि इस दौर में जबकि इस्लाम का भय लोगों के दिलों में लगातार बढ़ रहा है इस बात को बड़े जोर के साथ कहना चाहता हूँ कि कुरआन ने बार बार प्यार, स्नेह और मुहब्बत पर ज़ोर दिया है। अगर कुछ अत्यंत अपरिहार्य परिस्थितियों में कुरआन ने रक्षात्मक युद्ध की अनुमति भी दी है तो वह केवल शांति की स्थापना के लिए थी।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आज हम देखते हैं कि प्राय सरकारें और समूह चाहे वह मुसलमान हैं या ग़ैर मुस्लिम जो युद्ध में शामिल हैं वे भी यही दावा करते हैं कि वे शांति की स्थापना के लिए युद्ध कर रहे हैं। सामान्य धारणा यही है कि प्राय लोग बड़ी शक्तियों से जो युद्ध की जा रही हैं उनसे ज़रा देखो करते हैं या कम से कम उनके कार्यों को किसी धर्म या विश्वास के साथ नहीं जोड़ते। हालांकि बाद हम एक ऐसे वातावरण में रह रहे हैं जिस में इस्लामी शिक्षाओं को आलोचना का निशाना बनाया जा रहा है हम देखते हैं कि हर प्रकार के उत्पीड़न और युद्ध जिन में मुसलमान शामिल हैं उन्हें तुरंत इस्लामी शिक्षाओं से जोड़ दिया जाता है। जबकि इन लोगों और जमाअतों की आवाज़ें जो इस्लाम की सच्ची और शांतिपूर्ण शिक्षाओं का प्रसार करने की कोशिश कर रही हैं उनकी आवाज़ को या तो सुना ही नहीं जाता और फिर न ही उनकी कोई व्यापक उपयुक्त प्रचार किया जाता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मेरे निकट यह बात बहुत अनुचित और नकारात्मक परिणाम पर आधारित है। इस प्रकार के वैश्विक संकट के अवसर पर हमें यह बुनियादी सिद्धांत याद रखना चाहिए कि हर प्रकार की बुराई और अन्याय को दबाया जाए और हर प्रकार की भलाई और मानवता को फैलाया जाए। इस तरह बुराई अधिक दूर तक नहीं फैल सकेगी जबकि नेकी और शांति दूर तक फैले जाएगी और हमारे समाज को सुंदर बना देगी। अगर हम इस अच्छाई को जो दुनिया में है अधिक बढ़ाएँ तो इस तरह हम उन पर विजय पा सकते हैं जो शांति और मानवता के उच्च मूल्यों को विकृत करना चाहते हैं। लेकिन हम देखते हैं कि दुनिया इस सिद्धांत को स्वीकार करने और समझने में असमर्थ है और यही कारण है कि मीडिया विश्व शांति की स्थापना में अपने अखबारों की संख्या में वृद्धि और अपने दर्शकों की संख्या में वृद्धि को प्राथमिकता देती है। वह मीडिया जो बढ़ चढ़ कर अल्पसंख्यक उत्पीड़न का प्रचार करता है वह दरअसल आई.एस जैसे बुरे समूह के प्रचार अभियान को मदद देने का कारण बन रहा है जबकि इस का कर्तव्य यह बनता है कि वह दुनिया में मौजूद अच्छाइयों को स्पष्ट करे और वह अपने इस काम में विफल होता दिखाई देता है।

हुज़ूर ने फरमाया कि यह एक ऐसा अन्याय है जो अधिक वितरण और झगड़े के बीज बो रहा है। विश्व राजनीति में आतंकवाद को हराने के लिए आवश्यक है कि शांति की स्थापना हमारा अत्यंत उद्देश्य हो। और इसके लिए सभी लोगों की सहमति होगी। यदि आप एक मुसलमान की बात पर विश्वास नहीं करते तो मैं आपके सामने कुछ प्रमुख ग़ैर मुसलमानों के बयान देता हूं जो राजनीतिशास्त्र के विशेषज्ञ हैं और दुनिया में शांति चाहते हैं। उदाहरण के लिए जब हम यह कहते हैं कि उग्रवाद को और विशेष रूप से आई.एस जैसे आतंकवादी समूहों को कैसे हराया जाए तो ऑस्ट्रिया के विदेश मंत्री ने हाल ही में कहा है कि हमें विवेकपूर्ण रणनीति

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्हम्दो लिल्लाह आज अल्लाह तआला ने जमाअत अहमदिया स्वीडन को अपनी दूसरी मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई है। जिसका नाम मस्जिद महमूद रखा गया है। सब मर्दों तथा स्त्रियों ने माशा अल्लाह इस मस्जिद के निर्माण में बड़ी श्रद्धा का प्रदर्शन किया है। जहां कमाने वालों ने बढ़ चढ़कर कुरबानी की हैं और इस मस्जिद के निर्माण में जितना यथा सम्भव कुरबानियां की हैं वहाँ औरतें, बच्चे भी पीछे नहीं रहे और अल्लाह तआला के घर के निर्माण के लिए धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने के उदाहरण स्थापित किए है।

जमाअत अहमदिया में कई ऐसे लोग हैं जिनका अल्लाह तआला की कृपा से यह स्वभाव है कि वित्तीय कुरबानी करने के लिए व्याकुल रहते हैं और जमाअत के लिए ख़ुदा तआला के लिए खर्च करने की यह वह इस्लामी भावना है जो इस ज़माने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने हम में फूंकी है। जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत के लोगों में वित्तीय कुरबानी पर आश्चर्य व्यक्त किया था आज भी यह कुरबानियां हैरान कर देती हैं।

इस मस्जिद का निर्माण और ऊपर दो कमरों का निवास, कार्यालय पुस्तकालय आदि पर जो मुझे लगभग खर्च दिया गया है वह साढ़े सैंतीस लाख क्रोनर का है।

अल्लाह तआला वित्तीय कुरबानी करने वालों और उन सब को अच्छा बदला दे जिन्होंने इस मस्जिद और कंपलकस निर्माण में किसी भी तरह से भाग लिया है। बड़ी खूबसूरत मस्जिद निर्माण हुई है। क्षेत्र के लोग भी उसकी सुंदरता की सराहना कर रहे हैं।

मस्जिद महमूद मालम के बनाने के बारे में जमाअत के लोगों की आर्थिक कुरबानी की ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।

मस्जिद के निर्माण का अधिकार भी तभी अदा होगा जब उसे इबादत करने वालों से अधिक से अधिक आबाद करेंगे। ख़ुद भी यहां आकर अपनी नमाज़ों से इसे आबाद करें और तब्लीग़ कर के क्षेत्र के लोगों को भी इस्लाम की शिक्षा से परिचित करवाएंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से हमारी जमाअत के लिए मस्जिदों की आवश्यकता, महत्तव और इस के उद्देश्य और ज़रूरतों का वर्णन इस बारे में जमाअत के लोगों को विशेष नसीहतें।

यही न समझ लें कि हम ने एक सुंदर मस्जिद निर्माण कर ली तो हमारे कर्तव्य अदा हो गए और सब काम समाप्त हो गया इस मस्जिद के निर्माण के बाद हमारा मूल काम अब शुरू हुआ है।

इस मस्जिद के निर्माण का धन्यवाद आपस में पहले से बढ़कर प्यार और मुहब्बत की अभिव्यक्ति से भी हम ने करनी है। आप सब ने करनी है जो यहाँ रहते हैं और जो दुनिया में कहीं भी रहने वाले अहमदी हैं। इस मस्जिद के निर्माण के बाद आप ने पहले से बढ़कर इस्लाम की शिक्षा के नमूने लोगों को दिखाने हैं और इस बारे में लोगों को परिचित करना है। वास्तविक सुन्दरता तो मस्जिद की तब दिखेगी जब यह इबादत करने वाले इस मस्जिद में इबादत करने के कारण से आध्यात्मिक सुन्दरता दिखाएंगे। इस मस्जिद की बाहरी सुन्दरता को आध्यात्मिक सुन्दरता में बदलें। यह बहुत बड़ा काम है जो हम ने करना है। यहाँ के रहने वालों ने करना है कि बाहरी सुन्दरता को आंतरिक और आध्यात्मिक सुन्दरता में बदलना है और आध्यात्मिक सुन्दरता एक निरंतरता को चाहती है लगातार कोशिश करना चाहती है हर अहमदी आध्यात्मिक सुन्दरता को बनाए रखने का संकल्प करे।

इस मस्जिद की सुंदरता भी नमाज़ियों की संख्या पर है। ऐसे नमाज़ियों की संख्या में जो शुद्ध होकर ख़ुदा तआला की इबादत करना चाहते हैं या करने वाले हैं।

कुछ लोग कहते हैं जमाअत में ज़कात अदा करने का ध्यान नहीं दिया जाता और यह इस्लाम का मूल आदेश है और उसे छोड़ चन्दों पर अधिक ज़ोर दिया जाता है, जबकि यह विचार ग़लत है। ज़कात जो कर्तव्य है उस की ओर ध्यान दिलाया जाता है और बार-बार बतायाा जाता है। कई ख़ुत्बे में पिछले कई वर्षों से इस पर बहुत विस्तार से कुछ अवसरों पर प्रकाश डाल चुका हूँ और फिर यह कैसे हो सकता है कि हम ध्यान न दिलाएं ज़कात का तो ख़िलाफत की प्रणाली के साथ भी एक मामला में बड़ा गहरा संबंध है कि आयत इस्तिख़लाफ जिस में ख़िलाफत प्रणाली की हिदायत और भविष्यवाणी की गई है अल्लाह तआला ने इससे अगली आयत में नमाज़ की स्थापना और ज़कात को अदा करने का ध्यान दिलाया है। अगर दूसरे चन्दों और तहरीकों के बारे में कहा जाता है तो जैसा कि मैंने कहा कि ज़कात प्रत्येक पर अनिवार्य नहीं है इसका एक निसाब है इसकी कुछ शर्तें हैं और न ही इसे सभी खर्च पूरे हो सकते हैं और जितने व्यापक काम अब जमाअत के दुनिया में हो रहे हैं उनके लिए दूसरे चन्दों पर ध्यान देना आवश्यक है और वसीयत और नियमित रूप से अपने ऊपर फर्ज़ कर के मासिक जमाअत को चंदा देनी की जो प्रणाली है यह प्रणाली तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्थापित है।

धर्म की दृढ़ता इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा ही मिलनी थी और मिली है क्योंकि आप आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे दास के रूप में दुनिया में आए और आप को अल्लाह तआला ने भेजा ही इसलिए कि इस्लाम की शिक्षा के वास्तविक नमूने स्थापित हों। इस्लाम की खोई हुई साख को फिर से स्थापित करें। ख़िलाफत की प्रणाली आप के माध्यम से ही इस समय जारी होनी थी और हुई है और आज दुनिया में केवल जमाअत अहमदिया ही है जिस में ख़िलाफत की वह व्यवस्था जारी है जो सही इस्लामी शिक्षा का प्रचार कर रही है इसे फैला रही है। जो अल्लाह तआला के संदेश को दुनिया में फैला रही है जो इबादतों की स्थापना के लिए मस्जिदें बना रही है न कि फित्ना फसाद की जगहें। और यह बातें दृढ़ता का कारण हैं।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 13 मई 2016 ई. स्थान - मस्जिद मालम (Malm) स्वीडन

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ

اٰتَى الزَّكٰوةَ وَ لَمۡ يَخۡشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰۤى اُولٰٓئِكَ اَنۡ يَّكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُهۡتَدِيۡنَ
(अत्तौबा :18)

اَلَّذِيۡنَ اِنۡ مَّكَّنّٰهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ اَمَرُوۡا بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَ نَهَوۡا عَنِ الۡمُنۡكَرِ ؕ وَ لِلّٰهِ عَاقِبَةُ الۡاُمُوۡرِ
(अल्हज्ज :42)

अल्हम्दो लिल्लाह आज अल्लाह तआला ने जमाअत अहमदिया स्वीडन को अपनी दूसरी मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई है। जिसका नाम मस्जिद महमूद रखा गया है। सब मर्दों तथा स्त्रियों ने माशा अल्लाह इस मस्जिद के निर्माण में बड़ी श्रद्धा का प्रदर्शन किया है। यह एक बड़ी परियोजना थी। जबकि यहां छोटी जमाअत है और इस दृष्टि से उनके लिए यह वास्तव में बहुत बड़ी परियोजना थी। यहाँ कई बेरोज़गार भी हैं, बूढ़े भी हैं, बच्चे भी हैं, घरेलू औरतें भी हैं लेकिन जहां कमाने वालों ने बढ़ चढ़कर कुरबानी की हैं और इस मस्जिद के निर्माण में यथा सम्भव कुरबानियां की हैं वहाँ औरतें, बच्चे भी पीछे नहीं रहे और अल्लाह तआला के घर के निर्माण के लिए धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने के उदाहरण स्थापित किए है। कौन है जिस की इच्छाएं नहीं हैं? कौन है जिसकी ज़रूरत नहीं? और इस ज़माने में जब कई सांसारिक और भौतिक चीजें ध्यान खींच रही हैं अहमदियों की वित्तीय कुरबानी देखकर इंसान हैरान रह जाता है। केवल एक मस्जिद के निर्माण का प्रश्न नहीं है। मस्जिदों का निर्माण, नमाज़ सेंटर के निर्माण, और मिशन हाऊसज़ की ख़रीद तथा निर्माण की परियोजनाए लगातार जारी हैं और इसके अतिरिक्त कई और खर्च हैं और दुनिया में हर जगह यह काम हो रहे हैं। और फिर दूसरे चंदे भी साथ-साथ चल रहे हैं। अपनी आवश्यकताओं और निर्माण पूरा करने के साथ-साथ अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में रहने वाले अहमदी ग़रीब देशों के रहने वाले अहमदियों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए भी कुरबानी दे रहे हैं या ग़रीब देशों के रहने वाले अहमदियों की आर्थिक स्थिति के कारण कुरबानी के बावजूद जो कमी रह जाती है उसे भी बेहतर स्थिति में रहने वाले अहमदी पूरा करके उन देशों की जमाअत की ज़रूरतों को पूरा करने में मदद करते हैं। बहरहाल जमाअत अहमदिया में कई ऐसे लोग हैं जिनका अल्लाह तआला की कृपा से यह स्वभाव है कि वित्तीय कुरबानी करने के लिए उत्सुक रहते हैं और जमाअत के लिए ख़ुदा तआला के लिए खर्च करने की यह वह इस्लामी भावना है जो इस ज़माने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे ग़ुलाम ने हम में फूंकी है। जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत के लोगों में वित्तीय कुरबानी पर आश्चर्य व्यक्त किया था आज भी जैसा कि मैंने कहा यह कुरबानियां हैरान कर देती हैं और यह सब अल्लाह तआला की कृपा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादे का प्रकटन है कि अल्लाह तआला आप की आवश्यकताओं को पूरा फरमाता रहेगा।

इस मस्जिद का निर्माण और ऊपर दो निवास के कमरे, कार्यालय, पुस्तकालय आदि पर जो मुझे खर्च दिया गया है वह लगभग साढ़े सैंतीस लाख क्रोनर का है या 3.2 मिलियन पाउंड का सवा तीन लाख पाउंड का यह खर्च हुए हैं। हॉल और मुरब्बी हाउस और किचन आदि भी बना है। हॉल की finishing अब हो रही है। प्रशासन का मानना है कि अब कुछ खर्च अधिक हो तथा आठ दस लाख क्रोनर अधिक खर्च होंगे।

जैसा कि जमाअत अहमदिया के प्राय परियोजनाओं में होता है काफी काम हम वकार अमल के माध्यम से भी कर लेते हैं और इस दृष्टि से लागत में कुछ बचत भी हो जाती है। स्वयं सेवक वालन्टीयरज़ काम कर रहे हैं। कुछ ने मुझे बताया कि दिन रात यहाँ रहे या थोड़ी देर के लिए घर जाते थे और फिर आ जाते थे ताकि जल्दी काम ख़त्म हो और उद्घाटन हो सके। लेकिन फिर भी कुछ स्थान जैसा कि मैंने कहा पूरे नहीं हो सकीं। यह ठेकेदार या मज़दूर जब एक बार प्रवेश कर जाएं तो अपनी इच्छा से निकलते हैं। यहां प्रशासन को यह मार्जिन (margin) रखकर फिर मुझे दावत देनी चाहिए थे। बहरहाल अल्लाह तआला वित्तीय कुरबानी करने वालों और उन सब को अच्छा बदला दे जिन्होंने इस मस्जिद और कंपलकस के निर्माण में किसी भी तरह से भाग लिया है। बड़ी खूबसूरत मस्जिद निर्माण हुई है। क्षेत्र के लोग भी उसकी सुंदरता की सराहना कर रहे हैं। दो दिन पहले अखबार और रेडियो के प्रतिनिधि यहां आए हुए थे। मुझे भी उन्होंने यही कहा कि बड़ी खूबसूरत मस्जिद निर्माण हुई है और यह इस क्षेत्र की सुंदरता में बड़ी वृद्धि है।

कुरबानी की भावना की अभिव्यक्ति कैसे बच्चों, वयस्कों ने की। इसके कुछ उदाहरण देता हूं।

एक ग्यारह साल की बच्ची ने मस्जिद के चंदा के लिए कुछ सौ क्रोनर पेश किए और कहा कि काफी समय से उसने जो जेब खर्च जमा किया था वह मस्जिद के निर्माण के लिए अदा करने के लिए आई है।

दस ग्यारह साल की बच्ची और अमीर साहब के पास या जो भी चंदा लेने वाली प्रशासन है। उनके पास आई और पांच सौ क्रोनर मस्जिद के निर्माण के लिए अदा किए और बताया कि उसके पास दो तोते थे जिन्हें बेचकर उसने यह राशि मस्जिद के लिए अदा करने के लिए प्राप्त की। यहाँ इन देशों में pet या पालतू जानवर रखने का बड़ा शौक है लेकिन अहमदी बच्ची ने यहां के बच्चों की तरह अपने पालतू जानवर को प्राथमिकता नहीं दी बल्कि ख़ुदा तआला के घर के निर्माण को अपने शौक पर प्राथमिकता दी। वास्तव में मूल शौक और प्राथमिकता अल्लाह तआला की ख़ुशी ही है जो अहमदी बच्चे ही समझ सकते हैं। जिन्हें बचपन से ही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस बात से यह एहसास पैदा हो जाता है कि मस्जिद के निर्माण में भाग लेने वाला जन्नत में अपना घर बनाता है और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया कि शहरों के बेहतरीन स्थान मस्जिदें हैं फिर यह भी फरमाया कि कबीलों में मस्जिदों बनाओ। मुहल्लों में, शहरों में मस्जिदों बनाओ। इसी बात का परिणाम है कि हम हर जगह मस्जिदें बनाने की कोशिश करते हैं।

मुझ से कई पत्रकार सवाल करते हैं जहां कहीं मस्जिद बनाने जाओ, कि यहां क्यो बनाई गई है? इस की क्या विशेषता है? किस लिए बनाई गई।? यहां भी लोगों ने सवाल किया। न मालम की सुविधा है न किसी ओर स्थान की। हमारा काम मस्जिदें बनाना है ताकि जहां कुछ अहमदी हैं इकट्ठा हों और अपनी इबादत का हक़ अदा कर सकें।

एक बच्ची एतकाफ बैठी थी उसने यहां प्रशासन से संपर्क किया और अपना ज़ेवर मस्जिद के लिए पेश किया। ज़ाहिरी तौर पर बहुत कीमती ज़ेवर न था मगर वही आभूषण इसकी कुल जमा पूंजी थी और उसके माता पिता ने उसे उपहार दिया था और इस बच्ची ने जमाअत के जिस आदमी को गहना दिया उसे विशेष रूप से कहा कि मेरे माता पिता को बताना कि यह गहने मैंने चंदे में दे दिया है।

एक और वाकिफा नौ बच्ची भी ऐसी है जिसने सभी गहने और जेब खर्च के रूप में जो राशि उसे मिली हुई थी उसने एक लिफाफे में डालकर और पत्र लिखकर अपने पिता के तकिया के नीचे रख दिया कि यही सब कुछ मेरे पास है इसके अतिरिक्त कोई ऐसी चीज़ नहीं जो इस मस्जिद के लिए ख़ुदा के सामने पेश कर सकूँ।

ऐसी युवा बच्चियां भी हैं जिन की नई- नई शादी हुई थी और उन्होंने अपने गहने के शौक पूरे नहीं किए थे अपना सारा गहना मस्जिद के निर्माण के लिए पेश कर दिया।

कई महिलाओं ने जिनके पतियों ने पहले से ही अच्छे वादे किए थे और पूर्ण अदायगी कर दी थी इन महिलाओं ने अपने ज़ेवर और जो जमा पूंजी थी वह मस्जिद के निर्माण के लिए अदा कर दी।

यह बताया गया कि यहाँ दो महिलाएं ऐसी थीं जिन्हें वित्तीय कुरबानी की ताकत नहीं थी या उनके पास कुछ नहीं था मगर उनके पास पाकिस्तान में पिता द्वारा ख़ानदानी मकान मिला था। उन्होंने वह मकान बेचकर इसकी कुल राशि जो वहाँ लाखों में थी मस्जिद निर्माण में दे दी।

एक ख़ादिम ने मस्जिद में अदा करने के लिए एक बड़ी राशि का वादा किया था जिस में एक हिस्सा उनकी पत्नी से था लेकिन दुर्भाग्य से यह जोड़ी अलग हो गई और वादों के सिलसिले में जब उनसे संपर्क किया गया तो ख़ादिम के पिता ने कहा कि इस महिला से जुदाई हो गई है वह अपना हिस्सा ख़ुद अदा करेगी लेकिन इस युवा ने कहा नहीं क्योंकि मैंने उसकी ओर से वादा किया था इसलिए जुदाई के बावजूद मैं ही यह वादा पूरा करूँगा और पूरा अदा कर दिया। कहीं तो ऐसे लोग हमें नज़र आते हैं जो औरत के वैध अधिकार नहीं देते और क़ज़ा का निर्णय न मानने के कारण से कई बार उन्हें सज़ा भी हो जाती है हालांकि वह उन का कर्तव्य होता है और औरत का अधिकार होता है और कहीं ऐसे हैं जैसा कि मैंने बताया कि जुदाई के बावजूद वादे पूरे कर रहे हैं और वास्तव में यही लोग हैं जो मोमिन कहलाने के हकदार हैं।

मालम जमाअत के एक ख़ादिम जो अस्थाई नौकरी करते थे, अस्थायी नौकरी थी, अंश कालिक नौकरी थी जब उन्हें मस्जिद का वादा बढ़ाने की तहरीक की गई तो उन्होंने दस हज़ार क्रोनर से बढ़ाकर एक लाख क्रोनर अपना वादा कर दिया और अगले सप्ताह ही पचास हज़ार क्रोनर अदा करने के लिए पैसे लेकर मस्जिद में आ

गए। जब उनसे पूछा गया कि आपने इतनी रकम कहां से एकत्र की? हालत तो अभी तुरंत ऐसी नहीं है और वादा भी कुछ समय के लिए था। दो साल में विभाजित था तो उन्होंने कहा कि मैं अपनी कार बेच दी है। कार बेचकर और जो भी घर में और इसके अतिरिक्त जो पैसे जमा थे वह अदा करने के लिए ले आया हूँ। अल्लाह तआला ने इस कुरबानी के फलस्वरूप उन्हें स्थायी नौकरी भी प्रदान कर दी और पहले से बढ़ कर अच्छी और नई कार ख़रीदने की भी उन्हें ताकत दे दी है।

यह वह कुरबानी की भावना है जो हमें कई अहमदियों में हर जगह नज़र आती है। यहां विशिष्ट नहीं है। अल्लाह तआला की कृपा से विभिन्न देशों में, विभिन्न स्थानों में, फैले हुए कई ऐसे अहमदी हैं और यहाँ और भी होंगे। ये कुछ उदाहरण मैंने दिए हैं।

इस मस्जिद की जगह और निर्माण और क्षमता के बारे में भी संक्षिप्त बता दूँ कि मस्जिद निर्माण की योजना 1999 ई में शुरू हुई था। जब परिषद को आवेदन प्रस्तुत किया गिया था उसके लिए आदरणीय एहसानुल्लाह साहब ने पांच हज़ार वर्ग मीटर का ज़मीन का टुकड़ा ख़रीद कर जमाअत को पेश किया था। यह क्षेत्र एक टीले पर है और एक प्रमुख जगह पर स्थित है। क़रीब से मुख्य राजमार्ग यहाँ से गुज़रती है और नार्वे और स्वीडन को पूरे यूरोप से भी जोड़ती है और इस तरह स्वीडन और नॉर्वे के सभी बड़े शहरों को भी जोड़ती है। बड़ी व्यस्त राजमार्ग है। जहां दूर से ही मस्जिद की सुंदर और ऊंची इमारत हर आने जाने वाले को नज़र आती है और तौहीद का संदेश देती है।

अल्लाह तआला करे कि प्रत्येक अहमदी भी अपना हक के बाद अदा करे और प्रचार के द्वारा भी यह मस्जिद निर्माण तौहीद फैलाने का स्रोत हमेशा बनी रहे और इसकी असली सुंदरता जो धार्मिक शिक्षा की ख़ूबसूरती है और जिस उद्देश्य के लिए बनाई गई है वह प्रकाशित हो कर चमके।

इस कंपलकस का कुल निर्माण किया गया क्षेत्रफल 2353 वर्ग मीटर है। पांच इमारतों पर आधारित है। बड़ी इमारतें मस्जिद महमूद में हैं। यह मुख्य मस्जिद है इसका क्षेत्रफल लगभग 1494 वर्ग मीटर है अर्थात लगभग पन्द्रह सौ वर्ग मीटर है। साढ़े सात सौ वर्ग मीटर स्पोर्ट्स हॉल है। इसके अतिरिक्त और इमारतें हैं। मस्जिद के दो हॉल हैं एक ऊपर एक नीचे। पुरुषों के लिए और महिलाओं के लिए। यहाँ कुछ सवाल करने वाले सवाल कर देते हैं कि आप महिलाओं को तो अलग कर देते हैं मुख्य मस्जिद में रहने नहीं देते। यहाँ इन आपत्ति करने वालों का आरोप भी दूर हो जाता है जो लोग इस्लाम पर आपत्ति करने के रास्ते तलाश करते रहते हैं उनके लिए भी यहाँ काफी जवाब है कि एक ही मस्जिद के ब्लॉक में दोनों हॉल हैं और एक तरह के हॉल हैं। इन हॉलों में प्रत्येक में पांच सौ लोगों के नमाज़ पढ़ने की क्षमता है। इसी तरह जो स्पोर्ट्स हॉल है इसमें सात सौ नमाज़ी नमाज़ अदा कर सकते हैं। इस तरह अल्लाह तआला की कृपा से सत्रह सौ(1700) लोग इकट्ठे नमाज़ अदा कर सकते हैं। आज तो बाहर से बहुत सारे लोग आए हुए हैं इसलिए मस्जिद भरी नज़र आ रही है लेकिन सामान्य परिस्थितियों में क्षमता के लिहाज़ से यह बहुत बड़ी मस्जिद है। पूरे देश की जमाअत भी अगर जमा हो जाए तब भी आधी जगह नमाज़ पढ़ने वालों के लिए खाली रहेगी। हॉलों में ऊपर भी खाली रहेगी नीचे भी खाली रहेगी। तो अपनी संख्या यहां के लोगों को बढ़ानी चाहिए। यहां के लोगों में इस्लाम के बारे में जो ग़लत फहमियां हैं उन्हें दूर करें और उन्हें दूर करके एकेश्वरवाद की ओर लाएं। इन लोगों से सहानुभूति की मांग है और उनका अधिकार है जो कि एहसान यहां की सरकारों ने और जनता ने इस देश के रहने वालों ने हमें जगह देकर किया है या आप को जगह देकर आप पर क्या है इसका अच्छा बदला यह है कि उन्हें अल्लाह तआला के निकट लाएं। मस्जिद के निर्माण का अधिकार भी तभी अदा होगा जब उसे इबादत करने वालों से अधिक से अधिक आबाद करेंगे। ख़ुद भी यहां आकर अपनी नमाज़ों से इसे आबाद करें और तब्लीग़ कर के क्षेत्र के लोगों को भी इस्लाम की शिक्षा से परिचित करवाएंगे और यही बात है जिसके की तरफ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें एक जगह ध्यान दिलाया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"इस समय हमारी जमाअत को मस्जिदों की बड़ी जरूरत है। यह ख़ुदा का घर होता है जिस गांव या शहर में जमाअत की मस्जिद स्थापित हो गई तो समझो कि जमाअत की तरक्की की बुनियाद पड़ गई। अगर कोई ऐसा गांव हो या शहर जहां मुसलमान कम हों या न हों और वहाँ इस्लाम की तरक्की करनी हो तो एक मस्जिद बना देनी चाहिए तो ख़ुद ख़ुदा मुसलमानों को खींच लाएगा। (अर्थात दूसरे मुसलमान भी आ जाएंगे और यहां के स्थानीय लोगों से भी संख्या बढ़ेगी) फरमाया "लेकिन शर्त यह है कि मस्जिद की स्थापना में निय्यत श्रद्धा वाली हो केवल अल्लाह के लिए उसे क्या जाए। नफस के स्वार्थों या किसी बुराई को हरगिज़ दखल न हो तब बरकत देगा।"

इस शर्त पर हमेशा प्रत्येक को विचार करना चाहिए। पूरी ईमानदारी हो नीय्यत में या किसी प्रकार की बुराई और प्रलोभन दिलों में न हो और विशेष रूप से ख़ुदा तआला की प्रसन्नता पाने के लिए कुरबानी की जाए और मस्जिद बनाई जाए और मस्जिद को आबाद किया तो अपार बरकत पड़ती है।

फरमाया कि "जमाअत की ही मस्जिद होनी चाहिए जो अपनी जमाअत का इमाम हो और उपदेश आदि करे। और जमाअत के लोगों को चाहिए कि सब मिलकर इस मस्जिद में नमाज़ जमाअत के साथ अदा क्या करें।" फरमाया कि "जमाअत और एकता में बड़ी बरकत है।" यह बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है जो हर जगह के रहने वालों को याद रखनी चाहिए। चाहे वह नॉर्वे के हैं। डेनमार्क के हैं या दुनिया के अन्य देशों के हैं कि मस्जिद की आबादी का उद्देश्य भी जमाअत की इकाई है। इसलिए इस इकाई को हमें स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए।" फरमाया कि "मतभेद फूट पैदा करती है और यह समय है कि इस समय एकता और सहमति को बहुत तरक्की देनी चाहिए। एकता में, गठबंधन में, प्यार में, मुहब्बत में बढ़ें और छोटी छोटी बातों को अनदेखा कर देना चाहिए।" छोटी छोटी बातों पर लड़ाई झगड़े कुधारणाएं यह समाप्त करें।" फरमाया कि "छोटी छोटी बातों को अनदेखा कर देना चाहिए कि फूट का कारण होती हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 119-120 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

हम ने जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की है तो इसलिए कि इस्लाम की शिक्षा को जिसे मुसलमान न केवल भूल चुके हैं बल्कि विभिन्न प्रकार की बिदअतों को फैला कर, सांप्रदायिकता में लग कर, इस्लामी मूल्य तो एक तरफ रही नैतिक मूल्य भी भुला बैठे हैं इससे बचकर हमें व्यक्तिगत के स्थान पर अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। दूसरों से नसीहत हासिल करनी चाहिए हमें एक इकाई बनना चाहिए और आपस में सहमति और एकता पैदा करें। इस के लिए अल्लाह तआला के बताए हुए तरीके पर चलें। इसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ों और मस्जिदों के हवाले से जो हमें नसीहत फरमाई है वे मैं प्रस्तुत करता हूँ।

आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"नमाज़ में जो जमाअत का इमाम रखा है इसमें यही उद्देश्य है कि एकता पैदा होती है और फिर इस एकता को व्यावहारिक रंग में लाने की भी हिदायत और ताकीद है कि परस्पर पैर भी बराबर हैं।" जब पंक्ति बनाकर खड़े हों तो बराबर पैर रखें। ऐढ़ियाँ एक पंक्ति में हों। एक लाईन में हों और पंक्ति सीधी हो और एक दूसरे से मिली हुई हों। फरमाया कि "इससे अभिप्राय है कि मानो एक ही इंसान का आदेश रखें।" ऐसे सीधे हों कि लगे कि एक ही इंसान हैं "और एक के नूर दूसरे में प्रवेश कर सकें।" किसी में अधिक आध्यात्मिकता है किसी में कम है तो आप ने फ़रमाया कि जो अध्यात्म का प्रकाश है एक दूसरे में प्रवेश करे। "वह अन्तर जिस से स्वार्थ परायणता और स्वार्थ पैदा होती है वह न रहे।" यह आपकी इच्छा थी। स्वार्थ परायणता और स्वार्थ बिल्कुल समाप्त हो जाए और एक हो जाओ। फरमाया कि "यह ख़ूब याद रखो कि इंसान में यह शक्ति है कि वह दूसरे के नूरूं को अवशोषित करता है। फिर इसी एकता के लिए आदेश है कि दैनिक नमाज़ें मुहल्ले की मस्जिद में और सप्ताह के बाद शहर की मस्जिद में और फिर साल के बाद ईदगाह में जमा हों और सारी धरती के मुसलमान साल में एक बार बैतुल्लाह में इकट्ठे हों। इन सभी आदेशों के उद्देश्य वही एकता है

(लेक्चर लुधियाना रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 282-283)

नमाज़ से लेकर हज तक जितने भी आदेश हैं, इबादते हैं, उनका उद्देश्य क्या है? ताकि मुसलमान एक क़ौम बन जाएं। अब दुर्भाग्य से सबसे अधिक फूट और उपद्रव और दंगा इस समय मुसलमानों में है। तो हम अहमदी हैं जिन्होंने यह नमूने स्थापित करने हैं और दुनिया को इस्लाम की सच्ची और सुंदर शिक्षा के बारे में बताना है।

फिर आप फरमाते हैं

" मस्जिदों की वास्तविक सुन्दरता इमारतों के साथ नहीं है बल्कि उन नमाज़ियों के साथ है जो ईमानदारी के साथ नमाज़ पढ़ते हैं। वरना ये सब मस्जिदें वीरान पड़ी हुई हैं।" आप ने मुसलमानों की जो मस्जिदें थीं उनकी ओर इशारा किया है।

फरमाया कि "नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद छोटी थी खजूर की छड़ियों से उसकी छत बनाई गई थी और बारिश के समय छत में से पानी टपकता था। मस्जिद की रौनक नमाज़ियों के साथ है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में दुनियादारों ने भी एक मस्जिद बनाई थी वह ख़ुदा तआला के आदेश से गिरा दी गई इस मस्जिद का नाम मस्जिद ज़रार था यानी हानिकारक। इस मस्जिद की ज़मीन धूल के साथ मिला दी गई। मस्जिदों के लिए आदेश है कि तक्वा के लिए बनई जाएं।

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 170 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: वास्तव में कुरबानी की भावना जो पुरुषों, महिलाओं और बच्चों में है। इस मस्जिद के निर्माण के लिए दिखाई देती है, विशेष रूप से बच्चों की नि:स्वार्थ और भोली कुरबानी जो हर बनावट से मुक्त हैं। यह इस बात का सबूत है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं और शिक्षा ने हमें सामान्य रूप में धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने का एहसास दिया है और हमारी मस्जिद बनाने की सोच दुनियादारी के उद्देश्य से नहीं है। विशेष रूप से इबादत करने वालों के लिए मस्जिद बनाई गई है। तक्वा पर चलते हुए अल्लाह तआला की ख़ुशी को पाने के लिए है। इसलिए हमें अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए किए हुए हर काम के बाद यह चिंता करनी चाहिए कि एक लक्ष्य को प्राप्त करने के बाद हम अपने जीवन के मूल उद्देश्य से लापरवाह न हो जाएं। यही न समझ लें कि हम ने एक सुंदर मस्जिद निर्माण कर ली तो हमारे कर्तव्य अदा हो गए और सब काम समाप्त हो गया। इस मस्जिद के निर्माण के बाद हमारा मूल काम अब शुरू हुआ है। यहां रहने वालों को और हर एक को याद रखना चाहिए।

وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अज़ज़ारियात 57)

अर्थात हम ने जिन्नों और इंसानों को इबादत के लिए पैदा किया है। इसलिए हमेशा याद रखना है कि हम ने इस इबादत का हक अदा करना है और इबादत का अधिकार सब से अधिक मस्जिदों की आबादी बढ़ाने से ही अदा होता है जैसा कि हदीस में पहले वर्णन कर आया हूँ और फिर अल्लाह तआला अपने बन्दों से प्यार की अभिव्यक्ति देखें इन को पुरस्कार से सम्मानित करने की अभिव्यक्ति देखें कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से अल्लाह तआला ने हमें बताया कि जमाअत के साथ नमाज़ मस्जिद में आकर पढ़ने वाले को सत्ताईस गुना सवाब होता है।

(बुख़ारी किताबुस्सलात बाब फज़लन सलातुल जमाअत हदीस नम्बर 645)

फिर एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो कि हज़रत अबु हुरैरा ने रिवायत की है कि आदमी की जमाअत के साथ नमाज़ उसकी इस नमाज़ से पच्चीस गुना(कई जगह पर सत्ताईस गुना भी है) बेहतर है जो वह अपने घर में या बाज़ार में पढ़े और यह इसलिए कि जब वह वुज़ू करे और अच्छी तरह वुज़ू करे तो वह मस्जिद की तरफ निकले इस अवस्था में कि उसे केवल नमाज़ ही निकाल रही है तो जो कदम भी वह उठाएगा उसे एक कदम पर उसका एक स्तर ऊपर उठाया जाएगा और दूसरे पर एक गुनाह दूर कर दिया जाएगा और जब वह नमाज़ पढ़ेगा तो जब तक वह अपने नमाज़ पढ़ने के स्थान पर में रहेगा फरिशते उस के लिए रहमत की दुआ करते रहेंगे। क्या दुआ करेंगे? वे कहेंगे कि हे अल्लाह इस पर विशेष रहमत फरमा। इस पर दया फरमा। और फरमाया यदि तुम में से एक आदमी नमाज़ में ही होता है जब तक कि वह नमाज़ का इंतजार करे।

(बुख़ारी किताबुस्सलात बाब फज़लन सलातुल जमाअत हदीस नम्बर 647)

यह न समझें कि अल्लाह तआला इंतज़ार का इनाम नहीं देता। इंतज़ार भी सवाब है। जब मस्जिद में आकर नमाज़ के लिए इंतज़ार कर रहा होता है।

फिर एक रिवायत आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मस्जिद को सुबह शाम जाता है अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में अपनी मेहमान नवाज़ी(आतिथ्य) का समान तय्यार करता है।

(बुख़ारी किताबुस्सलात बाब फज़लन सलातुल जमाअत हदीस नम्बर 662)

अत: मस्जिदों में आने वाले अल्लाह तआला के मेहमान होकर रहते हैं। इस मस्जिद के निर्माण का धन्यवाद आपस में पहले से बढ़कर प्यार और मुहब्बत की अभिव्यक्ति से भी हम ने करना है। आप सब ने करना है जो यहाँ रहते हैं और जो दुनिया में कहीं भी रहने वाले अहमदी हैं। जब मस्जिदों में जाएं तो मस्जिदों के हक भी अदा करें। इस मस्जिद के निर्माण के बाद आप पहले से बढ़कर इस्लाम की शिक्षा के अपने नमूने लोगों को दिखाने हैं और इस से उन्हें परिचित करना है। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि मस्जिद मुसलमान बनाने का माध्यम बनेगी अगर हमारे कर्म इस्लाम की शिक्षा के अनुसार नहीं अगर हम इस्लाम का संदेश नहीं पहुँचा रहे तो लोग मस्जिद को देख कर बेशक इस ओर आकर्षित होंगे और जैसा कि मैंने बताया कि राजमार्ग पर स्थित है और चमकदार गुंबद दूर से लोगों का ध्यान खींचता है लेकिन यह ध्यान केवल बाहरी सुन्दरता की तरफ होगा। वास्तविक सुन्दरता तो मस्जिद की तब दिखेगी जब यह इबादत करने वाले इस मस्जिद में इबादत करने के कारण से आध्यात्मिक सुन्दरता दिखाएंगे। इसलिए जो क्षणिक जोश है कुरबानियां की हैं निश्चित रूप से वह भी मूल्यवान हैं। कुछ में क्षणिक जोश था, कइयों की कुरबानियां कई सालों पर फैली हुई हैं विशेष रूप से बच्चों और युवाओं की तरफ से लेकिन लगातार कुरबानी का दौर तो अब शुरू हुआ है कि इस मस्जिद की बाहरी सुन्दरता को आध्यात्मिक सुन्दरता में बदलें। यह बहुत बड़ा काम है जो हम ने करना है। जो यहाँ के रहने वालों ने करना है कि मस्जिद की जो बाहरी सुन्दरता है इसे आंतरिक और आध्यात्मिक सुन्दरता में बदलना है और आध्यात्मिक सुन्दरता एक निरंतरता को चाहती है। लगातार कोशिश करना चाहती है अत: हर अहमदी आध्यात्मिक सुन्दरता के इस क्रम को बनाए रखने का सकंल्प करे।

इस आयत में जो मैंने शुरू में तिलावत की हैं। इसमें पहली आयत जो सूर: तौबा की है अल्लाह तआला फरमाता है अनुवाद इस का यह है कि अल्लाह तआला की मस्जिदें तो वही आबाद करता है जो अल्लाह तआला पर ईमान लाए और आख़िरत के दिन पर और नमाज़ की स्थापना करे और ज़कात दे और अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी से भय न खाए तो क़रीब है कि वे हिदायत प्राप्त लोगों में गिने जाएँ।

इसलिए मस्जिद बनाने का उद्देश्य अल्लाह तआला पर ईमान है और अल्लाह तआला पर ईमान उस समय पूर्ण है जब इंसान हर तरह के शिर्क से अपने आप को सुरक्षित रखे। सब कुछ ख़ुदा तआला को समझे। फिर आख़िरत पर ईमान है इसकी व्याख्या है लेकिन अगर इंसान सिर्फ इस बात पर ही विचार कर ले कि आख़िरत दुनिया से अच्छी है तो फिर सांसारिक मामूली बातों के अधिग्रहण पर अपनी सब शक्तियां खर्च करने के स्थान पर अपना ज़ोर लगाने के स्थान पर आख़िरत के पुरस्कारों का वारिस अपने आप को बनाने के लिए मनुष्य फिर कोशिश करे।

अल्लाह तआला एक जगह फरमाता है।

وَ لَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا (यूसफ 110)

और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए जिन्होंने तक्वा धारण किया वास्तव में बहुत अधिक बेहतर है। अब एक घर तो मस्जिद का निर्माण करके एक मोमिन बनाता है लेकिन इस घर की आबादी मस्जिद की आबादी तक्वा से जुड़ी है। अत: मस्जिद के निर्माण का हक भी तक्वा पर चलने से अदा होगा और तक्वा के बारे में एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

"मुत्तकी बनने के लिए यह आवश्यक है कि इसके कि बाद कि मोटी बातों जैसे व्यभिचार, चोरी, लोगों के हक़ मारना, दिखावा, तिरस्कार, कंजूसी के छोड़ने में पक्का हो, गन्दे आचरण से परहेज़ करके उनके विरूद्ध अच्छे आचरण का विकास करे।" गंदे और व्यर्थ आचरण जो हैं, बुरे काम जो हैं उन्हें छोड़े और उत्कृष्ट और उच्च नैतिकता को न केवल धारण करे बल्कि इस में तरक्की करे। फरमाया कि "लोगों से अच्छी तरह और आदत से व्यवहार करो, सहानुभूति से बर्ताव करे।" ये हैं चरित्र यह है तकवा कि लोगों से भी प्यार और मुहब्बत से पेश आओ। नैतिकता से पेश आओ। उनसे सहानुभूति करो चाहे इस कि वे कौन है। प्रत्येक से चाहे वे मुसलमान, ग़ैर मुस्लिम है। अपना है, पराया है।" अल्लाह तआला के साथ सच्ची निष्ठा और ईमानदारी दिखलाए। सेवाओं के प्रशंसनीय स्थान खोजे।" अल्लाह तआला की पसंदीदगी की निगाह उस पर पड़े। ऐसे काम वह करे। "इन बातों से मनुष्य मुत्तकी कहलाता है और जो लोग इन बातों के जमा करने वाले होते हैं जिन में यह सब बातें जमा हो जाती हैं वही वास्तविक मुत्तकी होते हैं अगर एक विशेषता किसी में व्यक्तिगत रूप से हो तो उसे मुत्तकी नहीं कहेंगे।" ये सारे अच्छे आचरण जो हैं वे जब जमा हो जाएं तो मुत्तकी होता है यह नहीं कि एक नेकी कर ली। चंदा दे दिया, नेकी हो गई, नमाज़ पढ़ ली नेकी हो गई नहीं। चंदे भी, नमाज़ें भी, लोगों की सेवा भी, लोगों से सहानुभूति भी अच्छे आचरण भी अच्छी बात भी, ये है मुत्तकी की निशानी है। फरमाया

"जब तक कुल मिलाकर अच्छे आचरण उस में न हों मुत्तकी नहीं हो सकता।"
(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 400 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए जैसा कि मैंने कहा है कि हमारी जिम्मेदारियां बढ़ रही हैं इस मस्जिद का हक़ अदा करने के लिए एक बड़ा परिवर्तन हमें अपने अंदर पैदा करना होगा।

फिर नमाज़ की स्थापना की ओर ध्यान दिलाया है और नमाज़ की स्थापना पांच बार जमाअत के साथ है। इसलिए इस मस्जिद की सुंदरता भी नमाज़ियों की संख्या पर है। ऐसे नमाज़ियों की संख्या पर जो शुद्ध होकर ख़ुदा तआला की इबादत करना चाहते हैं या करने वाले हैं। फिर ज़कात की ओर ध्यान दिलाकर ग़रीबों के अधिकार की ओर भी ध्यान दिला दिया। एक वास्तविक मोमिन जो अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह नमाज़ की स्थापना और इबादतों पर ध्यान देने के साथ अवश्य अपने माल को शुद्ध करने की भी चिंता करेगा और माल को शुद्ध करने के लिए सबसे अच्छा स्रोत अपने माल को ख़ुदा तआला के मार्ग में खर्च करना और उसके बन्दों के अधिकार को अदा करने के लिए खर्च करना है और वित्तीय कुरबानी का जो सहीह एहसास है वह आज हम देखते हैं कि अहमदी के अतिरिक्त और किसी को नहीं है।

अल्लाह तआला ने कुरआन में कई जगह यहाँ ज़कात अदा करने की ओर ध्यान दिलाया है। अपने धन खर्च करने की ओर ध्यान दिलाया है और ज़कात को विशिष्ट करके भी ध्यान दिलाया है। कुछ लोग कहते हैं जमाअत में ज़कात अदा करने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता और यह इस्लाम का मूल आदेश है और उसे छोड़ चन्दों पर अधिक ज़ोर दिया जाता है, जबकि यह विचार ग़लत है। ज़कात जो अनिवार्य है उस की ओर ध्यान दिलाया जाता है और बार-बार बताया जाता है। मैं कई ख़ुत्बे में पिछले कई वर्षों से इस पर बहुत विस्तार से कुछ अवसरों पर प्रकाश डाल चुका हूँ और फिर यह कैसे हो सकता है कि हम ध्यान न दिलाएं ज़कात का तो ख़िलाफत की प्रणाली के साथ भी एक मामला में बड़ा गहरा संबंध है कि आयत इस्तिख़लाफ जिस में ख़िलाफत प्रणाली की हिदायत और भविष्यवाणी की गई है। अल्लाह तआला ने इससे अगली आयत में नमाज़ की स्थापना और ज़कात को अदा करने का ध्यान दिलाया है। और अगर दूसरे चन्दों और तहरीकों के बारे में कहा जाता है तो जैसा कि मैंने कहा कि ज़कात प्रत्येक पर अनिवार्य नहीं है इसका एक निसाब है इसकी कुछ शर्तें हैं और न ही इसे सभी खर्च पूरे हो सकते हैं और जितने व्यापक काम अब जमाअत के दुनिया में हो रहे हैं उनके लिए दूसरे चन्दों पर ध्यान देना आवश्यक है और वसीयत और नियमित रूप से अपने ऊपर फर्ज़ कर के मासिक जमाअत को चंदा देनी की जो प्रणाली है यह प्रणाली तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की स्थापित है।

बहरहाल इस समय में इस विवरण में नहीं जा रहा। मैं ने इस को आंशिक रूप से उल्लेख किया है जो मैं बताना चाह रहा हूं वह यह कि मस्जिदों के निर्माण के साथ हमारी जिम्मेदारियां बढ़ती हैं और उन्हें अदा करने की तरफ ध्यान देना चाहिए। अल्लाह तआला से अपना संबंध जोड़कर भी यह ध्यान होगा, आख़िरत पर नज़र रखते हुए भी यह ध्यान होगा अपने तक्वा की गुणवत्ता बढ़ाकर और अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए भी जब कोशिश करेंगे तो फिर ही हक अदा होगा। नमाज़ की स्थापना के भी और सृष्टि की सेवा के द्वारा भी हक अदा होगा। धर्म की दृढ़ता इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा ही मिलनी थी और मिली है क्योंकि आप आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे ग़ुलाम के रूप में दुनिया में आए और आप को अल्लाह तआला ने भेजा ही इसलिए कि इस्लाम की शिक्षा के वास्तविक नमूने स्थापित हों। इस्लाम की खोई हुई साख को फिर से स्थापित करें। आप ख़ात्मुल ख़ुलफा भी हैं और दुनिया को बताएं कि इस्लाम की ख़ूबसूरती किया है। तो आप के आने का उद्देश्य यह है कि दुनिया इस्लाम की सुंदरता देख सके।

और दूसरी आयत जो मैंने तिलावत की है वह सूरत हज की आयत है। इसमें अल्लाह तआला ने उन का उल्लेख किया है जिन्हें अल्लाह तआला जब दृढ़ता प्रदान करता है तो वे जिन गुणों वाले बनते हैं उनमें नमाज़ की स्थापना भी है। ज़कात का अदा करना भी है। नेक बातों को फैलाना भी है और बुरी बातों से रोकना है। इस ज़माने में जिसके द्वारा दुनिया में दृढ़ता मिलनी थी जैसा कि मैंने कहा वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मिलनी थी। ख़िलाफत प्रणाली के माध्यम से ही इस समय जारी होनी थी और हुई है और आज दुनिया में केवल जमाअत अहमदिया ही है जिस में ख़िलाफत की वह व्यवस्था जारी है जो सही इस्लामी शिक्षा का प्रचार कर रही है इसे फैला रही है। जो अल्लाह तआला के संदेश को दुनिया में फैला रही है जो इबादतों की स्थापना के लिए मस्जिदें बना रही है न कि फित्ना फसाद की जगहें। और यह बातें दृढ़ता का कारण हैं अर्थात इस्लाम की शिक्षा को फैलाकर सम्मान और गरिमा और शक्ति पैदा कर रही हैं या उनसे इस्लाम को सम्मान गरिमा और शक्ति मिल रही है।

अत: हर अहमदी की यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि इस तरफ सोचे इस लक्ष्य को समझे और उसके लिए अपने वादों को पूरा करते हुए अपनी सोचों को ख़ुदा तआला की ख़ुशी के अनुसार ढालने की हर समय कोशिश करते रहें। इस आयत के आलोक में इस बात को हमेशा अपने सामने रखें कि ख़ुदा तआला के सच्चे बन्दे अल्लाह तआला से मदद प्राप्त करते हैं और उन्हें अल्लाह तआला से मदद मिलती है फिर अगर आदमी सच्चा है वास्तविक मोमिन है जब वह अल्लाह तआला को मदद के लिए पुकारता तो अल्लाह तआला से मदद मिलती है वह अपनी सारी शक्तियां और कौशल मानवता की भलाई के लिए खर्च करते हैं यह सच्चे बन्दों, मोमिनों की निशानी है और साथ ही ख़ुदा तआला के हक भी निभाते हैं। ख़ुदा तआला का भय रखने वाले और ईमान में बढ़ने वाले होते हैं। तक्वा से जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं और दूसरों को भी अच्छाई की हिदायत करते हैं और बुराईयों से रोकने वाले हैं।

अल्लाह तआला करे कि हम इन बातों को समझने वाले हों। अल्लाह तआला का हक देने वाले हों। आपस के प्रेम में भी बढ़ाने वाले हों। मस्जिद का भी हक़ अदा करने वाले हों और प्रचार का भी हक़ अदा करने वाले हों। वित्तीय कुरबानी का अस्थायी जोश ही हम में न हो बल्कि आध्यात्मिक विकास के स्थायी जोश को अपनी रूपों में व्याप्त करने वाले और जारी करने वाले हों ताकि इस ज़माने के इमाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे प्रेमी के साथ जो हम ने बैअत की प्रतिज्ञा की है उसे पूरा कर सकें। अल्लाह तआला प्रत्येक को इसकी तौफीक प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वो कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 16 June 2016 Issue No. 15

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 2 का शेष

की ज़रूरत है जो इस्लामिक स्टेट (ISIS) से युद्ध करने के लिए सीरिया के राष्ट्रपति असद को भी अपने साथ मिलाया जाए। वह कहते हैं कि मेरे निकट प्राथमिकता आतंकवाद के ख़िलाफ लड़ाई है और यह बड़ी शक्तियां जैसे रशिया और ईरान के सहयोग के बिना असंभव है।

इसी तरह प्रोफेसर जॉन ग्रे (John Gray) जो एक सेवानिवृत्त राजनीतिक हैं जिन्होंने कई साल तक लंदन स्कूल ऑफ अर्थशास्त्र में पढ़ाया है। वह हाल ही में मौजूदा राजनीतिक प्रणाली शांतिपूर्ण प्राथमिकता " के महत्त्व के बारे में लिखा कि सरकारी व्यवस्था चाहे लोकतांत्रिक हो, सत्तावादी हो, राज्य की हो या रिपब्लिकन, यह सब शांति की स्थापना की तुलना में कम महत्त्व रखते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मेरी राय में यह एक बहुत ही ज्ञान वर्धक टिप्पणी है। लेकिन इसके बावजूद बड़ी शक्तियों ने इन देशों में जो इससे पहले अपेक्षाकृत स्थिर थीं, सरकार (regime) परिवर्तन को अधिक महत्त्व दिया। जैसे पश्चिम इस बात पर तुला हुआ था कि इराक से सद्दाम को हटाया जाए। इसलिए इस तेरह वर्षीय युद्ध के बहुत दर्दनाक परिणाम आज भी महसूस किए जा सकते हैं। एक और काफी उदाहरण लीबिया जहां राष्ट्रपति गद्दाफी को 2011 में जबरन हटाया गया और तब से लीबिया लगातार अराजकता और विनाश में धंसता चला जा रहा है। लीबिया में राजनीतिक कमी का एक सीधा परिणाम यह निकला है कि अब आई.एस ने वहां आतंकवाद मज़बूत आधार और जाल फैला दिया है जो लगातार मज़बूत होता चला जा रहा है। अब स्थिति बहुत ख़तरनाक हो चुकी है। और यह खतरा इस क्षेत्र के लिए ही नहीं बल्कि यूरोप के लिए भी है जिसके विषय में मैं कुछ साल पहले उल्लेख किया था। इसलिए ऐसे देशों में प्राथमिकता सरकार (regime) बदलने पर नहीं होनी चाहिए बल्कि यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आम जनता को उनके मौलिक अधिकार मिलें और स्थायी शांति की स्थापना हो।

शाम (Syria) वापस लौटते हुए ऑस्ट्रिया के विदेश मंत्री की इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि सर्वोच्च उद्देश्य शांति की स्थापना होनी चाहिए। इसलिए बड़ी शक्तियों को सीरिया की सरकार के साथ संपर्क के माध्यम खुले रखने चाहिए और अन्य पड़ोसी देशों की मदद भी हासिल करनी चाहिए जिनका इस क्षेत्र में प्रभाव है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि याद रहे सकारात्मक परिवर्तन तभी संभव है जब व्यापक हित की लिए निजी हितों को हटा कर रखा जाए और हर समय न्याय के साथ काम किया। जैसा कि मैं कह चुका हूं कि इस्लाम कहता है कि न्याय वह आधार है जिस पर शांति का भवन निर्माण होता है। अत: हमें समय की तत्काल आवश्यकता की ओर ध्यान देना चाहिए। कई सालों से मैं उल्लेख कर रहा हूं कि दुनिया एक और विश्व युद्ध की ओर बढ़ रही है। और अब दूसरे लोग भी इसी निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं। तथ्य यह है कि अब कुछ महत्त्वपूर्ण लोग यह कहने लगे हैं कि तीसरे विश्व युद्ध शुरू हो चुका है। हालांकि फिर भी यह समझता हूं कि हमारे पास इस युद्ध को रोकने के लिए अभी कुछ समय है। लेकिन इसके लिए ज़रूरी है कि हम न्याय से काम लें और अपने अन्य सभी प्रकार के हितों को एक तरफ रख दें। पहले भी कई अवसरों पर मैं उग्रवादी समूहों की फंडिंग और उनकी आपूर्ति लाइन काटने के बारे में बात की है। तो हम अब भी यह नहीं कहा जा सकता कि इस पहलू से सारी कोशिशें की जा चुकी हैं। जैसे हाल ही विशेष जांच रिपोर्ट में जो वॉल स्ट्रीट जर्नल (Wall Street Journal) में कहा गया है कि आई.एस इराक के केंद्रीय बैंक प्रशासित नीलामी से बड़ी संख्या में अमेरिकी डॉलर प्राप्त कर रहा है। यही डॉलर इराक को अमेरिका के फेडरल रिजर्व सीधे प्रदान किए गए थे। इस लेख में कहा गया है कि अमेरिकी सरकार इस स्थिति में कम से कम जून 2015 में पूरी तरह अवगत थी। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि व्यक्तिगत रूप से मैं यह समझता हूं कि दुनिया की बड़ी ताकतों को इस व्यापार के विषय में बहुत पहले से पता था।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि इसके अतिरिक्त तेल की बिक्री के बारे में यह बात सभी अच्छी तरह जानते हैं कि विभिन्न समूहों यहां तक कि सरकारें भी आई.एस से तेल खरीद रही हैं। यह व्यापार क्यों रोके नहीं गए ? क्यों ऐसा सौदा (deals) पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाया गया ? मालूम होता है कि जब तेल की मांग का मामला हो तो नैतिकता को नज़र अंदाज कर दिया जाता है ! यह वह बिंदु है जो किंग्स कॉलेज लंदन के प्रोफेसर लीफ वीनर (Leif Wenar) ने अपने एक हालिया शोध में वर्णन किया है। वह लिखते हैं कि दुनिया तेल प्राप्त करने की लिए हर तरह के अत्याचार और दुर्व्यवहार को सहन करने को तैयार है। इसलिए देशों ने आई.एस से भी तेल खरीदा और सूडान से जहां कई मानवाधिकार का शोषण किया गया है। यह बात वाणिज्यिक बाज़ार के बुनियादी सिद्धांतों के ख़िलाफ है जिसके अनुसार हिंसा के परिणाम में मालिकाना अधिकार स्थापित नहीं किए जा सकते।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि इसके अतिरिक्त हाल ही में निर्देशक इराक ऊर्जा संस्थान ने अपने एक शोध में बयान किया कि आई.एस वाले कैसे तेल बेच रहे थे। निबंधकार लिखता है कि तेल टैंकर द्वारा अंबार प्रांत से जॉर्डन भेजा जाता है और कुर्दिस्तान के जरिए ईरान और कंडक्टर द्वारा तुर्की और सीरिया के घरेलू बाज़ार में भी बिक्री होता है। और इसी तरह इराक के कुर्दिस्तान क्षेत्र में जहां पर उसका बहुत सा हिस्सा स्थानीय रीफ़ाइन (refine) किया जाता है। बुद्धि स्वीकार नहीं करती कि इन देशों की सरकारी प्रशासन इस सभी श्रृंखला से अनजान हो जाएगी। इसलिए जब यह दावा किया जाता है कि आतंकवाद और उग्रवाद को खत्म करने के लिए हर संभव प्रयास जारी है, तो तथ्य यह दावा सही साबित नहीं करते। इन सब बातों के सामने रखते हुए कैसे कहा जा सकता है कि दुनिया में वास्तविक न्याय है। यह कैसे दावा किया जा सकता है कि ईमानदारी और अमानत को बहुत महत्त्व दिया जाता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि इसी तरह हाल ही में वैश्विक हथियार के प्रसार के विषय में भी कई रिपोर्ट मीडिया में आई हैं। सरकारी और विश्वसनीय रिपोर्ट के अनुसार पिछले साल के दौरान अमेरिका ने 46.6 अरब डॉलर के हथियार बाज़ार में बेच दिया। जो पिछले साल की तुलना में 12 अरब डॉलर अधिक था। और इन रिपोर्टों में यह भी कहा गया है कि यह हथियार अधिकतर उन देशों को बेच दिया जो मध्य पूर्व में हैं। और इस तरह वे सीरिया, इराक और यमन में युद्ध को हवा दे रहे थे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मैं फिर कहता हूँ कि अगर ऐसा व्यापार हो रहा है तो दुनिया में शांति और न्याय की स्थापना होना कैसे संभव है? यह जो मैंने कुछ उदाहरण दिए हैं इन तक प्रत्येक की पहुंच है। और यह प्रमुख विश्लेषकों और टिप्पणीकारों के विचार होते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जब तक समाज के हर स्तर पर विरासत कौमों के बीच भी न्याय के सिद्धांतों को लागू नहीं किया जाता हम दुनिया में सच्ची शांति नहीं देख सकते। न्याय के बिना आई.एस और इस प्रकार के अन्य उग्रवादी समूहों को हराने के लिए दसियों साल लगेंगे। हालांकि अगर दुनिया इस संदेश पर ध्यान दे और न्याय के ऊपर स्थापित हो और आतंकवाद के वित्त पोषण और आपूर्ति को रोकने के लिए सही अर्थों में कोशिश करे तो मैं समझता हूँ कि एक सेवानिवृत्त अमेरिकी जनरल के इस बयान के विपरीत जिसमें उसने यह कहा था कि आई.एस के ख़िलाफ युद्ध दस से बीस साल तक जारी रहेगा, मैं यह समझता हूं कि आतंकवाद का नेटवर्क बहुत जल्द नष्ट किया जा सकता है।

हुज़ूर अनवर ने कहा कि अंत में मैं यह कहना चाहता हूं कि मेरा यह विश्वास है कि जब तक दुनिया अपने निर्माता को नहीं पहचानती और उसे दुनिया के ख़ुदा स्वीकार नहीं करती वास्तविक न्याय नहीं प्राप्त कर सकती। न केवल यह कि वास्तविक विजय प्रबल नहीं होगा बल्कि दुनिया एक बहुत ही भयानक और विनाशकारी परमाणु युद्ध का सामना करेगी जिसके परिणाम हमारे भविष्य की पीढ़ियों को देखने पड़ेंगे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मेरी दुआ है कि दुनिया इस तथ्य को समझ जाए। मैं दुआ करता हूँ कि हम सब मानवता के वास्तविक लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपनी भूमिका निभाएं और मैं दुआ करता हूँ कि वास्तविक शांति जो न्यायपूर्ण हो दुनिया के सभी भागों में स्थापित हो जाए। इन शब्दों के साथ एक बार फिर आप सभी मेहमानों का आभारी हूँ कि आज की इस शाम में हमारे साथ शामिल हुए। अल्लाह तआला आप सभी पर अपनी बरकतें उतारे। बहुत बहुत धन्यवाद।

इस भाषण के बाद हज़ूर अनवर ने सामूहिक दुआ करवाई।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 22 अप्रैल 2016 ई पृष्ठ 13,14)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian,
Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India. Editor Shaikh Mujahid Ahmad